Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 11 ~ Issue 8 (2023) pp: 419-422
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी काल में पूर्णिया जिला का ऐतिहासिक अध्ययन

प्रभात कुमार सिंह
शोध छात्र, इतिहास विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ, बिहार

सार,

बंगाल के नवाब अलीवर्दी खां एवं सिराजुदौला के समय (1740–56 एवं 57 ई॰) में पूर्णियाँ राजनैतिक क्रियाकलापों एवं अन्य गतिविधियों का केन्द्र बना। बंगाल में प्लासी युद्ध के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी शासन के प्रारंभिक वर्षो में पूर्णियाँ के अधिपतियों को किसी न किसी रूप में ब्रिटिश शक्ति से संघर्ष करना पड़ा जिसमें सीमांचल का यह क्षेत्र ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के क्रिया–कलापों का एक गतिशील केन्द्र बना रहा। बंगाल के नबाब अलीवर्दी खां की मृत्यु (1756 ई॰) के उपरान्त उसका नाती, सिराजुददौला (मिर्जा मोहम्मद) गद्दी पर बैठा।[1] सिराजुददौला के विरूद्ध पूर्णियाँ का शौकत जंग, जो अर्लीवर्दी खां का नाती था, गद्दी प्राप्त करना चाहता था। संभवतः अंग्रेजों को यह आशा थी कि सिराजुददौला उत्तराधिकार के इस संघर्ष में हार जाएगा। इसलिए उन्होंने शौकतजंग का समर्थन किया। शौकतजंग का समर्थन राजवल्लभ, घसीटी बेगम (अलीवर्दी खां की लड़की) आदि द्वारा किया जा रहा था। भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की सत्ता कायम होने में प्लासी के युद्ध एवं उसमें सिराजुददौला की परायज का गहरा संबंध है, जिसके मूल में अंग्रेजों (कम्पनी) की साजिशें महत्वपूर्ण मानी जाती है।

विस्तार,

मुगलसम्राट औरंगजेब की मृत्यु (1707) ई॰ के बाद से एक विचित्र प्रकार की अराजकता सारे भारत में फैल गई। अधीनस्थ शासक इत्यादि ने अपने आपको अपने प्रदेशों का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। पंजाब में सिक्खों का पूर्ण प्रभुत्व जम गया, समस्त दक्षिण भारत मराठों के हाथों में आ गया तथा राजपूत राजाओं ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। अवध व दक्षिण के गवर्नरों ने भी केन्द्र की सत्ता तथा सर्वोच्चता मानने से इन्कार कर दिया। अफगान सरदारों ने रूहेलखंड अपने अधीन कर लिया। मराठे सामन्त, सिन्धिया और होल्कर ने मालवा को दो भागों में बांटकर दो नये राज्य स्थापित किये। इन नबाबों और राजाओं के बीच, द्वेष, ईर्ष्या एवं स्पर्धा बढ़ने लगी। केन्द्रीय सत्ता मृतप्राय थी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी, जो पहले से भारत में थी इस अराजक स्थिति को अंग्रेजी राज्य स्थापना के लिए अनुकूल पायी।[2] बंगाल में अंग्रेज विशेष रूप से सफल हुए। जिसमें अंग्रेजों ने कूटनीति, छल तथा अनैतिक मार्ग अपनाये।

अलीवर्दी खां को कोई लड़का (पुरूष उत्तराधिकारी) नहीं था किन्तु तीन पुत्रियाँ थी। तीनों पुत्रियों की शादी अलीवर्दी खां के भाई के तीन लडकों से हुई। सबसे छोटी लड़की का लड़का (नाती) सिराजुदौला को अलीवर्दी खां द्वारा उत्तराधिकारी बनाया जाना अन्य दो दामादों ने नापसंद किया जो क्रमशः ढ़ाका और पूर्णियाँ के गवर्नर थे। यह स्वाभाविक था कि वे (दामाद) मंसूबे बांधनेवाले व्यक्तियों के षड्यंत्रों और कुमंत्रणाओं का केन्द्र बने। यद्यपि दोनों अलीवर्दी के राज्य काल (जीवन) के अन्त में मर गये, तथापि ढ़ाका के गवर्नर की विधवा घसीटी बेगम और पूर्णियाँ के गवर्नर का लड़का शौकतजंग (अलीवर्दी खां का नाती एवं लड़की) सिराजुद्दौला के विरूद्ध उत्तराधिकारी के प्रश्न पर संघर्षशील रहे। तत्कालीन इतिहास कार औम्स लिखता है कि अलीवर्दी खां के बचने की कोई आशा न रही। इस पर ढाका के गवर्नर की विधवा ने (घसीटी बेगम) मकसूदाबाद राजधानी का नगर मुर्शीदाबाद को छोड़कर शहर से दो मील दक्षिण मोती झील नामक बगीचे में दस हजार आदमियों के साथ पड़ाव डाल दिया। अब बहुत लोग सोचने लगे कि सिराजुद्दौला के विरूद्ध संघर्ष में घसीटी बेगम का पलड़ा भारी पड़ेगा। इसलिए मिस्टर वाट्स आसानी से उस (औरत) के मंत्री को अनुग्रहित करने को राजी हो गये तथा प्रेसीडेन्सी (कलकत्ता) को उसकी प्रार्थना मान लेने की सलाह दी।[3]

बंगाल की गद्दी पर बैठने के बाद सिराजुद्दौला ने घसीटी बेगम को दबा दिया किन्तु बेगम का दीवान राजवल्लभ को अंग्रेजों ने अपनी ओर मिला लिया। सिराजुद्दौला को मालुम हुआ कि अंग्रेज शौकतजंग को (पूर्णियाँ के नबाब) मुर्शिदाबाद की गद्दी पर बैठाने की तजबीज कर रहे है। सिराजुद्दौला सेना लेकर पूर्णियाँ की ओर रवाना हुआ। खबर सुनते ही शौकतजंग नजराने लेकर स्वागत के लिए आगे बढ़ा। शौकतजंग ने अपने को बेकसूर बतलाया और अंग्रेजों के वे सब पत्र सिराजुद्दौला के सामने रख दिए, जिनमें अंग्रेजो ने शौकतजंग को सिराजुद्दौला के खिलाफ भड़काया था।[4] समझा जाता है कि अंग्रेजो ने नवाब विरोधियों का साथ देना प्रत्यक्ष रूप से शुरू कर दिया एवं प्रश्रय दिया। जब नबाब ने घसीटी बेगम को गिरफ्तार करवा लिया तब दीवान राजवल्लभ ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति अपने लड़के (किशन दास) के साथ कलकत्ता भिजवा दी तथा घसीटी बेगम की सम्पत्ति को भी छिपाने का प्रयास किया। कलकत्ता में अंग्रेजी बस्ती नबाब के शत्रुओं का आश्रय स्थल बनी हुई थी। नबाब सिराजुद्दौला ने कम्पनी के अधिकारियों से कृष्णवल्लभ को लौटाने की माँग की जिसे अंग्रेजो ने अस्वीकार कर दिया। पूर्णियाँ का गवर्नर शौकतजंग अब भी सिराजुद्दौला के विरूद्ध एक क्रांतिकारी षड़यंत्र का केन्द्र बना हुआ था। नबाब ससैन्य पूर्णियाँ की ओर चला एवं राजमहल पहुँचा, किन्तु वह अंग्रेजों की गतिविधियों के चलते पुनः मुर्शिदाबाद लौट आये। उसने अंग्रेजों के विरूद्ध सैनिक कार्यवाई की तथा कासिमवाजार के अंग्रेजी कोठी को हस्तगत किया। नबाब सिराजुद्दौला 16 जून 1756 को कलकत्ता पहुँचा एवं फोर्ट लिलियम पर विजय प्राप्त की। अंग्रेज इस समय हार गये।

इस बीच पूर्णियाँ के नबाब शौकतजंग सैद्धान्तिक सम्प्रभु मुगल दरबार दिल्ली से बंगाल की सूबेदारी का सनद प्राप्त किया।[5] पराजित अंग्रेज नेताओं को बंगाल की परिस्थितियों का ज्ञान था और वे कलकत्ता से भाग कर फलटा में शरण लिए हुए थे। यहाँ से अंग्रेजो ने सिराजुद्दौला के विरोधियों से सम्पर्क बनाना प्रारंभ किया। शौकतजंग की गद्दी लेने की चेष्टा से अंग्रेजो को नयी आशा का संचार हुआ। अंग्रेजो ने शौकतजंग के पास उपहारों के साथ एक पत्र भी भेजा, जिसमें यह कामना की गई थी कि वह (शौकतजंग) सिराजुद्दौला को हटा सकेगा। शौकतजंग को विश्वास था कि सिराजुद्दौला से असंतुष्ट जगत सेठ तथा जनरल मीर जाफर उसकी मदद करेंगे। किन्तु इनलोगों की सम्मिलित योजना के क्रियान्वयन के पूर्व ही सिराजुद्दौला ने पूर्णियाँ (शौकतजंग) पर चढ़ाई की। शौकतजंग पराजित हुआ एवं मारा गया। 16 अक्टूबर 1756 ई॰ में पूर्णियाँ (कटिहार) के मनिहारी नामक जगह पर सिराजुद्दौला और शौकतजंग के सैनिको के मध्य युद्ध हुआ। मुर्शिदाबाद से दो सैनिक टुकड़ियाँ चली, जिसमें एक का नेतृत्व उसका दीवान राजा मोहनलाल कर रहा था। सिराजुद्दौला को इस युद्ध में बिहार के नायब सुबेदार राजा रामनारायण एवं अन्य जमीनदारों की सैनिक सहायता प्राप्त हुई थी।[6] पूर्णियाँ का गवर्नर मोहनलाल को सिराजुद्दौला द्वारा बनाया गया।

इस प्रकार गद्दी पर बैठने के बाद थोड़े ही समय में सिराजुद्दौला ने अपने तीनों शत्रुओं घसीटी बेगम, शौकतजंग तथा अंग्रेजों को परास्त कर दिया। लेकिन ईस्ट इंडिया कम्पनी सरलता से पराजय स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। मद्रास से क्लाइव और वाटसन के नेतृत्व में सैनिक सहायता भेजी गई। अन्ततः सिराजुद्दौला और कम्पनी के मध्य प्लासी में संघर्ष हुआ और 29 जून 1757 ई॰ को कम्पनी ने मीरजाफर को बंगाल की गद्दी पर बैठाया। मीरजाफर सिराजुद्दौला का प्रमुख सेनानायक था जो कम्पनी से षडयंत्र के कारण मिला हुआ था। अब बंगाल के नबाव का अंग्रेजी कम्पनी के अधिकारियों पर नियंत्रण समाप्त हो गया एवं कम्पनी बंगाल का वास्तविक शासक बन गई। प्लासी युद्द से बंगाल की वह लूट आरम्भ हुई जिसने प्रदेश को निर्धन बना दिया।

मीरजाफर के समय में पूर्णियाँ में एक विद्रोह हुआ। हाजिर अलीखान ने मोहनलाल को कैद कर लिया और खजाना पर अधिकार जमा लिया। खादिम को इस कार्य में पूर्णियाँ के जमींदार अचित सिंह का समर्थन प्राप्त था। दोनों पूर्णियाँ के लोगों में लोकप्रिय थे। हाजिर अलीखान के विद्रोह को मीरजाफर ने खादिम हुसैन खान के द्वारा दबा दिया। हाजिर अली खान नेपाल भाग गया। किन्तु बाद में पूर्णियाँ का अधिपति नये गवर्नर खादिम हुसेन खान को मीरजाफर एवं कम्पनी के सैनिकों से युद्ध करना पड़ा। समझा जाता है कि 1760 ई॰ में मुगल सम्राट शाह आलम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के बढ़ते प्रभाव को समाप्त करने को तत्पर था जिसके समर्थन में पूर्णियाँ का गवर्नर खादिम हुसैन खाँ अपने सैनिकों के साथ चला गया था।[7] खादिम हुसैन खान के सम्बन्ध में कहा जाता है कि मीरन उससे (पूर्णियाँ के नबाब) लड़ना नहीं चाहता था, किन्तु अंग्रेज मीरन को पूर्णियाँ के नबाब से लड़ाकर पूर्णियाँ के नबाब का भी नाश करना चाहते थे। कम्पनी की सेना और पूर्णियाँ की सेना में कुछ लड़ाई हुई किन्तु केलो (कम्पनी के सैनिक कप्तान) का बयान है कि मीरन ने इस काम में अंग्रेजों को मदद न दी, इसलिए अकेले अंग्रेज पूर्णियाँ के नबाब पर विजय प्राप्त नहीं कर सके।[8]

मीरजाफर के पुत्र मीरन की मृत्यु के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने मीरजाफर के दामाद मीरकासिम को बंगाल का नबाब बनाया। समझा जाता है कि अंग्रेजों पर मीरकासिम का विश्वास न था। मुर्शिदाबाद की राजधानी में इन विदेशियों का प्रभाव बढ़ गया था, इसलिए मीरकासिम ने मुँगेर (बिहार) को अपनी नई राजधानी बनाया। मुँगेर की उसने सुंदर और मजबूत किलेबंदी की। करीब चालीस हजार फौज वहाँ जमा की गई जिसे प्रशिक्षित करने के लिए कई योग्य युरोपियन रखे गये। एक बहुत बड़ा तोप कारखाना खोला गया। उधर मीरकासिम के विरूद्ध अंग्रेज भी सतर्क हो गये।

*Corresponding Author: प्रभात कुमार सिंह

15 दिसम्बर 1762 को ईस्ट इंडिया कम्पनी और मीरकासिम के बीच एक संधि हुई जो मुंगेर की संधि के नाम से मशहूर है।[9] इसके बाद अंगेजों ने पटना, मुर्शीबाद, गिरिया, ऊटी, उदयनाला और मुंगेर में मीरकासिम को हराया। फलतः मीरकासिम को बंगाल छोड़कर भागना पड़ा। उदयनाला के युद्ध में सीमांचल की भूमिका देखने को मिलती है। इस समय पूर्णियाँ का गवर्नर शेर अलीखान अपने फौज के साथ नबाब से मिलने उदयनाला पहुँचे। इस समय पूर्णियाँ में एक विद्रोह हुआ। रोहेद्दीन हुसैन खान जो रौफखान का लड़का था, परिस्थिति का फायदा उठाते हुए अपने को पूर्णियाँ का शासक घोषित कर दिया। उसने मेजर एडम्स एवं मीरजाफर को अपना मालिक मानते हुए पत्र दिया तथा मीरजाफर से पूर्णियाँ की गवर्नरी प्राप्त किया।[10] राजा फतेह सिंह जो सहरसा के सोनबरसा राज के राजपूत शासक थे उदयनाला के युद्ध में अंग्रेजों को समर्थन दिया एसं मीरकासिम का विरोध किया।[11] अंग्रेजों ने बंगाल की गद्दी पर पुनः मीरजाफर को बैठाया। मीरकासिम बंगाल–बिहार से भाग कर अवध के नबाब के पास पहुँचा और बंगाल की नबाबी पुनः प्राप्त करने में सहायता चाही। अन्ततः मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय, मिरकासिम और अवध के नबाब शुजाउद्दौला की सम्मिलित सेना से अंग्रेजों का बक्सर के मैदान में (1764 ई॰) युद्ध हुआ। पराजित मुगल सम्राट को कम्पनी को दीवानी के अधिकार देने पड़े। अब कम्पनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में मालगुजारी उगाहने और दीवानी के न्याय का शासन प्राप्त हो गया। कम्पनी पहले से ही बंगाल की सर्वोच्च शासक बन चुकी थी, अब उसे वैध अधिकार भी प्राप्त हो गये। ईस्ट इंडिया कम्पनी को अब दीवानी प्राप्त हुआ तो व्यवस्था के अंतर्गत जमींदार मात्र टैक्स संग्राहक माने गये। ठीक समय पर राजस्व नहीं चुकाने पर वे हटाये जा सकते थे। फलस्वरूप जमींदारी खरीद बिक्री की वस्तु बन गई। कम्पनी के अंग्रेज और देशी नौकरशाह बेनामी नीलामी बोलकर जमींदारी खरीदने लगे।[12] पूर्णियाँ का प्रथम नील उद्योग नीलगंज में प्रारम्भ हुआ। पूर्णियाँ में नील कोठियाँ प्रायः यूरोपियनों की थी।[13] 1771 ई॰ में पूर्णियाँ के रामबाग में यूरोपियनों ने आकर रहना प्रारंभ किया।[14] सीमांचल में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के क्रियाकलापों की शुरूआत दीवानी प्राप्त करने (1765 ई॰) के बाद से देखने को मिलती है। कम्पनी शासन शुरू होने से पूर्व बिहार में प्रमुख फौजदारी जिला शाहाबाद, रोहतास, मुंगेर, बिहार, चम्पारण, सारण, तिरहुत एवं हाजीपुर थे। फौजदारी जिला मुंगेर और तिरहुत की शासन व्यवस्था खराब समझी जाती थी। 1769–70 ई॰ में पूर्णियाँ, छपरा, आरा, दरभंगा, सासाराम और मुंगेर के लिए सुपरवाइजर या कलक्टर कम्पनी शासन द्वारा नियुक्त किये गये। हेस्टिंग्स ने 18 फौजदारी अदालत के लिए व्यवस्था किया और आवश्यकता के अनुसार कुछ परिवर्त्तन किये गये। लूट और हत्याओं वाले जगहों पर अधिक पुलिस कम्पनी शासन द्वारा भेजे गये और पूर्णियाँ में पचास से अधिक सिपाही रखे गये। बिहार में फौजदारी अदालत भागलपुर, पूर्णियाँ एवं अजिमाबाद तथ सदरनिजामत–अदालत ताजपुर, दरभंगा और महिषी (चम्पारण) में कायम हुए। 1765–93 ई॰ तक कम्पनी द्वारा लगान व्यवस्था अनिश्चित रहा। आधुनिक सहरसा–मधेपुरा जिला का परगना चेई, कुछ समय के लिए निजामुद्दौला के जागीर के एक भाग के रूप में बंगाल प्रान्त के अधीन माना गया।[15] स्थाई भूमि व्यवस्था के समय परगना ''चेई'' भागलपुर के अन्तर्गत माना गया। आधुनिक सहरसा मधेपुरा जिला के परगना नारेदिगर, मल्हनी गोपाल, निशंकपुर कुर्दा और चेई परगना का सर्वे 1793 ई॰ में प्रारम्भ किया गया। 1793 ई॰ में सरजॉन शोर के समय परगना काबा खण्ड और नारेदिगर की चर्चा हुई है। 19वीं सदी के प्रारंभिक वर्षो में सहरसा के बनगॉव, पिपरा, बारा, रसपुर में अंग्रेज (खेती करने वाले) की उपस्थिति का पता 25 मार्च 1816 ई॰ के एक पत्र मुजफ्फरपुर कलेक्ट्रिएट रिकार्ड से चलता है।[16] 1771 ई॰ आते–आते कम्पनी के द्वारा जिलों में नायब दीवानों एवं कलक्टरों की नियुक्ति की गई।

पूर्णिया का पहला कलक्टर डुकरेल और नायब दीवान राजा देवी सिंह था। 1770–71 ई॰ में सारे बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा। कहा जाता है कि पूर्णियाँ की लगभग आधी आबादी काल के गाल में चली गई। राजस्व वसूलने के नाम पर जमींदारों और उनके महिलाओं को तंग किया गया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के नौकरों ने अधिकारियों के इशारों पर लूट मचाई। कृषक, कारीगर, बुनकर, आदि सभी वर्ग के लोग पीड़ित हुए। नायब दीवान देवी सिंह के अत्याचार से त्राण पाने के लिए पूर्णियाँ के लोगों ने मुर्शिदावाद और कासिम बाजार के सर्किट कोर्ट तक आवाज लगाई। डुकरेल ने देवी सिंह का पक्ष लिया। किन्तु कोर्ट में देवी सिंह के जोर जुल्म की कहानी (आरोप) साबित हुई और उसको बर्खास्त किया गया, जो पहली अहिंसात्मक विजय थी।

वारेन हेस्टिंग्स के अत्याचारों की अनेक शिकायतें इंग्लैंड की पार्लियामेन्ट के सामने रखा गया। वारेन हेस्टिंग्स पर रिश्वतखोरी और अनेक अन्यायों के लिए महाभियोग चलाया गया। इंग्लैंड पार्लियामेन्ट के सदस्य एडमण्ड बर्क ने अपनी बहस के दौरान पूर्णियाँ में कम्पनी द्वारा किये गये अत्याचारों का विवरण दिया है। समझा जाता है कि वारेन हेस्टिंग्स खुद देवी सिंह के गोरखधन्धों में शामिल था।

*Corresponding Author: प्रभात कुमार सिंह

–: संदर्भ :–

1. भारत में अंग्रेजी राज, पृष्ठ–124–27
2. भारत का संवैधानिक इतिहास, पृष्ठ–1–8
3. भारत में अंग्रेजी राज, पृष्ठ–21–25, 124–160
4. भारत का वृहत् इतिहास पृष्ठ–25–26
5. भारत में अंग्रेजी राज्य, पृष्ठ–128–29
6. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पूर्णियाँ पृष्ठ–74
7. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पूर्णियाँ पृष्ठ–75–77
8. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पूर्णियाँ, पृष्ठ– 77–80
9. भारत में अंग्रेजी राज्य पृष्ठ–170–71
10. भारत में अंग्रेजी राज्य पृष्ठ–193–206
11. हिस्ट्र ऑफ बिहार पृष्ठ–222–24
12. भारत में अंग्रेजी राज्य पृष्ठ–202
13. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, पृष्ठ–102–04
14. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पूर्णियाँ 227–30
15. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पूर्णियाँ 94–97
16. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सहरसा 38–40

*Corresponding Author: प्रभात कुमार सिंह